INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

# हरियाणा राज्य में लिंगानुपात : सिरसा जिले के शिशु लिंगानुपात का एक अध्ययन

## (Sex Ratio in Haryana State: Study of Child Sex Ratio in Sirsa District)

**डॉ राजेन्द्र कुमार मेघवंशी**
सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग (कला)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

**सुरेन्द्र कुमार**
शोधार्थी, भूगोल विभाग (कला)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
E-mail: surenderrattakhera@gmail.com

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2021-11761298/IRJHISMC210503

***सारांश :***

*विश्व के अन्य देशों के साथ साथ भारत देश में भी स्त्री जन्म दर की अपेक्षा पुरुष जन्म दर अधिक रही है हरियाणा जिले के सिरसा जिले में एक अध्ययन से ज्ञात होता है कि यहाँ भी पुरुष जन्म दर ज्यादा रह रही है। सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के निम्न स्तर तथा उनका स्त्रियों के प्रतिकूल होना स्त्री मृत्युदर की अधिकता का कारण है। बहुत से परिवार पुत्र की चाह में भ्रुण को जानबूझ कर नष्ट करा देते है। ऐसा अधिकतर शिक्षित और सम्पन्न परिवारों में हो रहा है। इसका मुख्य प्रयोजन सम्पत्ति और परिवार के व्यवसाय को बचाना तथा दहेज देने से बचना है। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक तथ्यों को प्रभावित करने वाले बहुत से जनांकिकीय तथ्य जैसे वृद्धि, वैवाहिक–संरचना और व्यवसायिक संरचना इस अनुपात द्वारा अत्यधिक प्रभावित होते हैं। क्षेत्रीय आधार पर लिंगानुपात में पाई जाने वाली विभिन्नता सामाजिक–आर्थिक प्रगति में असंतुलन का एक प्रमुख कारण बनती है।*

***मुख्य शब्द :*** *शिशु लिंगानुपात, मृत्युदर, असंतुलन, सिरसा जिला, जन्म दर*

**प्रस्तावना :**

किसी भी देश का आर्थिक विकास वहाँ पर पाये जाने वाले संसाधनों पर निर्भर करता है। इन संसाधनों में प्राकृतिक व मानवीय संसाधन शामिल होते है। प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी की सतह पर एक समान रूप में नहीं पाये जाते हैं अपितु कुछ स्थान पर अधिक तो कुछ स्थान पर कम पाये जाते है। अतः अलग–अलग देशों व प्रदेशों में अलग–अलग प्रकार के तथा विभिन्न मात्रा में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध होते हैं।

किसी भी देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग वहाँ पर पाये जाने वाले मानवीय संसाधनों पर निर्भर करता हैं। मानवीय संसाधनों में मानव की जनसंख्या, संरचना एवं विशेषता महत्वपूर्ण होती है। अतः किसी भी देश या प्रदेश में मानव जनसंख्या का अध्ययन उस देश व प्रदेश के लिये अत्यन्त लाभकारी होता है।

विभिन्न भूगोलवेत्ताओं के शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी देश के विकास में पाई जाने वाली जनसंख्या का योगदान नहीं होता है अपितु उस जनसंख्या की संरचना एवं विशेषता उससे भी

अधिक योगदान देती है। जनसंख्या की संरचना एवं विशेषता में स्त्री–पुरूष की जनसंख्या अनुपात, साक्षरता, शिक्षा, कार्यशील जनसंख्या, स्वास्थ्य आदि शामिल किये जाते हैं। इनमें लिंगानुपात का अध्ययन सामाजिक, आर्थिक व जनांकिकीय अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता हैं। लिंगानुपात के अध्ययन से किसी देश की सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान होता हैं। इस दृष्टि से लिंगानुपात का अध्ययन सामाजिक, आर्थिक व भूगोल में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हाल ही के दशकों में अत्यधिक महिला शिशु मृत्युदर के कारण शिशु लिंगानुपात का अध्ययन भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। इस कारण प्रस्तुत शोध में हरियाणा राज्य के लिंगानुपात का अध्ययन व सिरसा जिले के लिंगानुपात व शिशु लिंगानुपात का अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं।

**प्रस्तावित शोध के सोपान :**

**हीरालाल (2004)** अर्थव्यवस्था एवं समाज के विकास में लिंगानुपात (स्त्री–पुरूष अनुपात) की महत्वपूर्ण भूमिका के फलस्वरूप जनसंख्या भूगोल में इसका अध्ययन अपरिहार्य होता है। क्षेत्रीय आधार पर लिंगानुपात में पाई जाने वाली विभिन्नता सामाजिक–आर्थिक प्रगति में असंतुलन का एक प्रमुख कारण बनती है। यह एक सूचक भी होती है। इसी प्रकार प्रादेशिक अध्ययन और नियोजनगत विश्लेषण में यह अनुपात सहायक हो सकता है। लिंगानुपात में क्षेत्र एवं कालगत विभिन्नता मानव जीवन के विभिन्न आयु वर्गो में दोनों लिंगो के मृत्युदर तथा स्थानातंरण के कारण उत्पन्न असंतुलन से प्रभावित होती है। विभिन्न सामाजिक–आर्थिक तथ्यों को प्रभावित करने वाले बहुत से जनांकिकीय तथ्य जैसे वृद्धि, वैवाहिक–संरचना और व्यवसायिक संरचना इस अनुपात द्वारा अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

**बेउजाऊ(1966)** लिंगानुपात एक अति संवेदनशील सूचक है जो महिलाओं की स्थिति दर्शाता है। बालिकाओं को समान सम्मान और प्यार देने की भावना सृजित करने के लिये संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। 0–6 वर्ष के बच्चों में लिंगानुपात पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात में निरन्तर कम होता जा रहा है। बहुत से परिवार पुत्र की चाह में भ्रुण को जानबूझ कर नष्ट करा देते है। ऐसा अधिकतर शिक्षित और सम्पन्न परिवारों में हो रहा है। इसका मुख्य प्रयोजन सम्पत्ति और परिवार के व्यवसाय को बचाना तथा दहेज देने से बचना है।

**बोस (1978)** : सामाजिक–आर्थिक भूदृश्य के गत्यात्मक प्रतिरूप, लिंगानुपात में हुए परिवर्तन से किसी न किसी स्तर पर सम्बन्धित होते है। इस प्रकार किसी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिये लिंगानुपात एक आवश्यक तथ्य है।

**थॉमस, डब्ल्यू.एस. (1965)** : जनांकिकीय अवस्था के अनुसार लिंगानुपात को प्राथमिक (गर्भधान के समय), द्वितीयक (जन्म के समय) और तृतीयक (गणना के समय) नामक तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है। इनमें द्वितीयक अनुपात ही प्राकृतिक लिंगानुपात कहलाता है। इस प्रकार के वर्गीकरण में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके तुलनात्मक व क्रमबद्ध अध्ययन से सहायता मिलती है। जनसंख्या भूगोल में इसका विश्लेषण दोनों के समानुपातिक अंतर्सम्बध की सहायता से किया जाता है।

**प्रस्तावित शोध का महत्व :**

लिंगानुपात में वृद्धि तथा शिशु लिंगानुपात में कमी भारत के विभिन्न राज्यों में एक समान नहीं है। भारत

में सर्वाधिक लिंगानुपात केरल राज्य में है जहाँ 2011 में लिंगानुपात 1084 तथा 2001 में 1058 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थी। इसके अलावा केन्द्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में लिंगानुपात 2011 में 1038 तथा 2001 में 1001 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज किया गया। भारत में दो प्रदेश ऐसे हैं जहाँ लिंगानुपात महिलाओं के पक्ष में पाया गया है। इसके अलावा सभी राज्यों में लिंगानुपात पुरूषों के पक्ष में जाता है। दक्षिण के राज्यों में जैसे तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, गोवा में लिंगानुपात अपेक्षाकृत अच्छा है। इन राज्यों में 2011 में लिंगानुपात क्रमशः 995, 992, 968, 968 दर्ज किया है। इसके अलावा छत्तीसगढ़, उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड व असम ऐसे बड़े राज्य हैं जहाँ लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात 940 से अधिक है। इन राज्यों में 2011 में लिंगानुपात क्रमशः 991, 978, 974, 963, 954 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई।

उत्तर–पूर्व के कुछ राज्यों में भी लिंगानुपात जैसे मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय में भी लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात से अधिक दर्ज किया गया। 2011 में इन राज्यों में लिंगानुपात क्रमांक 987, 975, 961, 986 दर्ज किया गया। अन्य सभी राज्यों में लिंगानुपात देश के औसत लिंगानुपात से कम पाया गया। देश में सबसे कम लिंगानुपात 877 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर हरियाणा राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार दर्ज किया गया। जम्मू–कश्मीर, पंजाब, सिक्किम ऐसे राज्य हैं जहाँ लिंगानुपात 2011 में 900 से कम दर्ज किया गया। इन राज्यों में लिंगानुपात क्रमशः 883, 893, 889 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज किया गया। इसके अलावा केन्द्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़, दमन व दीव, दादर व नागर हवेली, अण्डमान व निकोबार में लिंगानुपात 900 से कम पाया गया। 2011 में इनमें लिंगानुपात क्रमशः 818, 618, 775, 878 स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर दर्ज किया गया।

हरियाणा राज्य में 2001 व 2011 के मध्य लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की गई। हरियाण में 1991 में लिंगानुपात 865 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर थीं जो सन् 2001 में घटकर 861 रह गया। इसके प्श्चात् 2011 में लिंगानुपात में वृद्धि होने के पश्चात् यह लिंगानुपात 877 स्त्रियां प्रति 1000 पुरूषों पर दर्ज की गई।

लिंगानुपात का विश्ववितरण प्रतिरूप यह स्पष्ट करता है कि क्षेत्रकाल संदर्भ में इसमें पर्याप्त विभिन्नताएं दृष्टिगत होती हैं। आधारभूत रूप में यह तीन कारकों द्वारा घटित होती है। जन्म के समय लिंगानुपात पुरूष स्त्रियों के मृत्युदर में विभिन्नता, तथा स्थानांतरण का प्रभाव। इन मूल कारकों के अतिरिक्त युद्ध, पुरूष और स्त्रियों के जीवन स्तर में अन्तर तथा त्रुटिपूर्ण आंकड़ा–संग्रह भी क्षेत्र विशेष के यौन संतुलन को प्रभावित करते है।

**प्रस्तावित शोध के उद्देश्य :**

विश्व के विभिन्न देशों के उदाहरण यह स्पष्ट करते है कि स्त्री जन्म दर की अपेक्षा पुरूष जन्मदर अधिक उच्च रही है। यद्यपि अधिकाशं समाजों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों की प्रधानता जन्म पूर्व क्षति के निम्न या उच्च होने के अनुसार हर विभिन्न देशों में लिंगानुपात जन्म के समय निम्न या उच्च रहते है। इसके अतिरिक्त लिंगानुपात में अंसतुलन के लिये अनेक कारक यथा पिता की उम्र, वंशानुक्रम, युद्ध, सिगरेटपान, कहवापान आदि भी उत्तरदायी माने गये हैं किन्तु इनमें से कुछ को निर्मूल सिद्ध किया जा चुका है।

जैविकीय दृष्टि से दोनों लिंगो में विभिन्न बीमारियों की प्रतिरोधी शक्ति भिन्न–भिन्न होती है। जब

स्त्रियों की अपेक्षा शिशु बालकों में उच्च मृत्यु दर रहती है लिंगानुपात 4 वर्ष की आयु तक संतुलित हो जाता है तथा इसके बाद के आयु वर्गो में बढ़ते हुए क्रमशः 95 वर्ष की आयु पर प्रति 1000 पुरूषों पर 2000 स्त्रियों का अनुपात पंहुच जाता है। विकसित देशों की इस प्रवृति की अपेक्षा विकासशील एवं अल्प विकसित देशों में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की मृत्युदर अधिक होती है। इन देशों में सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के निम्न स्तर तथा उनका स्त्रियों के प्रतिकूल होना स्त्री मृत्युदर की अधिकता का कारण है। भारत में पति हेतु अपने सुख–सुविधा का परित्याग करना और मुसलमान देशों में घर के भीतर घुट कर रहना स्त्री मृत्युदर की अधिकता का कारण हैं।

स्थानांतरण व्यापक रूप से लिंगानुपात को असंतुलित करता है। क्योंकि सामाजिक रीति, अर्थव्यवस्था आदि कारण स्थानांतरण में लिंगानुपात को प्रभावित करते है। विशेषरूप से उद्देश्य दूरी तथा अभिप्रेरणा भी लिंगानुपात को प्रभावित करते हैं। पहले स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों में स्थानांतरणशीलता अधिक थी, आज यातायात व संचार साधनों के विकास के कारण विकसित देशों में स्त्रियां भी स्थानांतरित होने लगी है। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में आस्ट्रेलिया, कनाडा आदि देशों में स्थानांतरण के कारण ही प्रति 100 स्त्रियों पर 100 पुरूषों की संख्या थी। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में भी संयुक्त राज्य अमेरिका में पुरूष अप्रवास के कारण प्रति 100 पर 106 पुरूष थे। अब स्त्रियों के आप्रवास सरल होने के कारण स्त्रियों की अधिकता हैं।

इसके विपरित विकासशील और अविकसित देशों में मानव जनसंख्या के स्थानांतरण में पुरूषों की ही प्रधानता रहती है। अंतर्देशीय स्थानांतरण के अंतर्गत नगरों में पुरूषों की प्रधानता और ग्रामरण क्षेत्रों में अपेक्षाकृत स्त्रियों की संख्या का अधिक होना सामान्य बात है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची :**

1. डॉ0 हीरालाल (2004), जनसंख्या भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर
2. थॉमस, डब्ल्यू.एस. (1965), जनसंख्या समस्या, टाटा मैक्ग्रा हिल. नई दिल्ली।
3. गोसाल, जी.एस. (198), लिटरेसी इन इण्डिया।
4. सिंह, एस.एन. (1989), भारत का जनसंख्या भूगोल, बी.आर. पब्लिशिंग हाउस, आगरा।
5. बोस, आशीष (1978), अर्बनाईजेशन, टाटा मैंक्ग्रा हिल. नई दल्ली।
6. अग्रवाल, एस.एन. (2006), इण्डियाज पोपुलेशन प्रोब्लम्स, द्वितीय संस्करण, टाटा मैक्ग्रा हिल, नई दिल्ली।